लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

अमीर खुसरो की काव्यगत विशेषताएं

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

अमीर खुसरो का साहित्यिक परिचय :- खड़ी बोली के ~~रूप~~ में प्रथम कवि के रूप में अमीर खुसरो बहुभाषागत वेद, महान् संगीतज्ञ, कुशल सैनिक और सच्चे राष्ट्र कवि प्रेम के रूप मे विख्यात है। इनका वास्तविक नाम अबुल हसन यमनुद्दीन था। खुसरो का जन्म 3 मार्च, 1325 ई० को उत्तरप्रदेश के एटाजनपद में स्थित पटियाली गाँव मे हुआ था। खुसरो खड़ी बोली हिन्दी के साथ ब्रजभाषा में भी मौलिक लेखन का कार्य किया है। ऐसा माना जाता है कि इन्होंने लगभग 100 से अधिक ग्रंथों की रचना की जिनमें से केवल 20 या 22 ग्रंथ ही उपलब्ध हो सके है।

अमीर खुसरो का बालपन दिल्ली के आस - पास बीता था। इसलिए उनके काव्य मे वहाँ कि प्रचलित खड़ी - बोली के शब्द पर्याप्त में मिलते है। और इसीकारण उन्हें खड़ी बोली के प्रथम कवि की संज्ञा दी जाती है। इसके उदाहरण :- खुसरो की पहेलियाँ, मुकरना, निस्बतें आदि में मिलते है।

एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

" एक नार ने अचरच किया ।
साँप मार पिंजड़े में जिया ।।"

अमीर खुसरो का व्यक्तित्व बहुयामी है। एक ओर वे सूफी परंपरा में आदर के साथ गिने जाते है, दूसरी ओर उनका बहुत से दरबारों से उनका गहरा संबंध रहा है। वे केवल साहित्यकार नहीं संगीतकार शब्दकोशकार और इतिहासकार के रूप में भी जाने जाते है। उन्होंने भारतीय और

ईरानी संगीत के मिश्रण से अनेक तालों और रागों का आविष्कार किया। शास्त्रीय संगीत में ख्याल परंपरा की शुरुआत का श्रेय खुसरो को ही दिया जाता है। इसके साथ उन्होंने एक अनेक वाद्ययंत्रों का अविष्कार किया था। विद्वानों का मानना है कि सितार, ढोलक तबला के खोज का श्रेय खुसरो को है।

अमीर खुसरो के अधिकांश रचनाएँ फारसी भाषा में लिखित है। इसके साथ खड़ी बोली और ब्रज भाषा में भी उनकी रचनाएँ प्राप्त है। हिन्दी में खुसरो की तीन रचनाओं का उल्लेख आता है। जिनमे केवल एक खलीगबानी ही उपलब्ध है। खुसरों को हिन्दी गजल का प्रवर्तक भी माना जाता है। फारसी साहित्य में उनके पाँच दीवान तथा चौदह मसनवियाँ है। उनके प्रसिद्ध फारसी ग्रंथों में नोह सिपहर, नूर फतोह, एजाजे खुसरवी, इसके अतिरिक्त खुसरों की फुटकर रचनाओं में मुकरियाँ पहेलिया गीत एनमिलिया निस्बद मिलती है। जिनके कारण हिन्दी साहित्य में उनकी ख्याति मिलती है।

कुछ उदाहरण इसप्रकार है —

" एक थाल मोती से भरा सबसे सिर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे मोती उससे एक ना गिरे।"

पहेली है।

" मेरा मुँह से श्रृंगार करावत आगें बैठ के मान बढ़ावत।
वासे चिक्कन नार कोई दिशा है सखि साजन?
ना सखि शीशा।"

मुकरी है।